भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVIII अंक–6 31 मार्च, 2023

न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमदिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः।।

मेरी उत्पत्ति को अर्थात् लीला से प्रकट होने को न देवता लोग जानते हैं और न महर्षिजन ही जानते हैं; क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं का और महर्षियों का भी आदिकारण हूँ। **श्रीमद्भगवद्गीता 10/2**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/131060 दिनांक 10.03.2023 के अनुसार **प्रो. अंकित सिंघल** ने 03.03.2023 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. अंकित सिंघल को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो, के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2023/127554 दिनांक 28.02.2023 के अनुसार **प्रो. ऋत्विक दास** ने 16.02.2023 से संस्थान के ऑप्टिक एवं फोटोनिक्स केन्द्र में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सह प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2023/131521 दिनांक 13.03.2023 के अनुसार **डॉ. हेमंत मिथुन प्रवीण** ने 13.03.2022 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/132872 दिनांक 15.03.2023 के अनुसार **डॉ. साक्षी कपूर** ने 09.03.2023 से संस्थान के नैनोस्केल अनुसंधान सुविधा (NRF) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/132855 दिनांक 15.03.2023 के अनुसार **डॉ. अरुण निम्माला** ने 06.03.2023 से संस्थान के नैनोस्केल अनुसंधान सुविधा (NRF) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/131560 दिनांक 13.03.2023 के अनुसार **डॉ. अच्युत मणि त्रिपाठी** ने 07.03.2023 से संस्थान के विद्युत इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2023/130881 दिनांक 09.03.2023 के अनुसार **डॉ. अन्ना वेंकट अंजनेय भारत कुमार** ने 01.03.2023 से संस्थान के परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र (ट्रिप–सी) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

पुनर्नियुक्ति

- **प्रो. (सुश्री) गीतम तिवारी** (परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र) को संस्थान संविधि के पैरा 13(2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2023 तक के लिए परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

- **प्रो. (सुश्री) रत्नमाला चटर्जी** (भौतिकी विभाग) को संस्थान संविधि के पैरा 13(2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2023 तक के लिए भौतिकी विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

- **प्रो. (सुश्री) रविन्दर कौर** (मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग) को संस्थान संविधि के पैरा 13(2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2023 तक के लिए मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्त किया गया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय/स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 मार्च, 2023 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. (सुश्री) गीतम तिवारी, प्रोफेसर, परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र (TRIPC)

प्रो. सुश्री गीतम तिवारी ने 16 जनवरी, 1990 को संस्थान में वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अगस्त, 1997 में सहायक प्रोफेसर, 14 नवम्बर, 2003 में सह प्रोफेसर तथा 13 अप्रैल, 2011 को प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया।

प्रो. गीतम तिवारी ने 1980 में रुड़की विश्वविद्यालय (भा.प्रौ.सं. रुड़की) के आर्किटेक्चर विभाग से स्नातक की उपाधि, 1984 में स्नातकोत्तर तथा 1987 में पीएच.डी. की उपाधि इलिनोइस यूनिवर्सिटी, शिकागो से प्राप्त की। वर्ष 1990 में आपने आई.आई.टी. के एप्लाइड सिस्टम रिसर्च प्रोग्राम (ASRP) में वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। आपने आई.आई.टी. दिल्ली के सिविल इंजीनियरी विभाग में सेवाएं प्रदान की तथा जुलाई, 2021 से परिवहन अनुसंधान एवं चोट रोकथाम केन्द्र (TRIP) के अध्यक्ष के रूप में सेवाएं दी। आपने सार्वजनकि परिवहन एवं सड़क सुरक्षा परियोजनाओं पर भारत के शहर, राज्य तथा राष्ट्रीय सरकारों के साथ काम किया। आपने 1997 से दिल्ली में मास्टर साइकिल प्लान तथा बाद में दिल्ली तथा पुणे मे हाई कैपिसिटी बस सिस्टम विकसित करने के लिए दिल्ली सरकार के साथ मिलकर काम किया।

आपने अनुसंधान फोकस शहरी वातावरण में पैदल चलने वालों एवं सार्वजनिक परिवहन

प्रयोक्ताओं से संबंधित सुरक्षा एवं परिवहन प्रणालियों के स्वास्थ्य प्रभावों को समझने पर रहा है। राष्ट्रीय नीति स्तर पर आपके अनुसंधान परिणामों के फलस्वरूप मेट्रो सिस्टम तक पैदल चलने वालों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए विशिष्ट दिशानिर्देश शहरी विकास मंत्रालय द्वारा जारी किए गए। भारतीय सड़क कांग्रेस की तीन समितियों के सदस्य के रूप में आपने साइकिल ट्रैक के लिए IRC दिशानिर्देशों, ग्रामीण सड़कों एवं राजमार्गो पर यातायात सुचारु रूप से करने के लिए दिशानिर्देश (ट्रैफिक कैलमिंग IRC 99-2018); ब्लैकस्पॉट पहचान तथा उपचार के लिए दिशानिर्देश में योगदान दिया।

आप 2007–2010 तक चाल्अर्स यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, स्वीडन में स्थायी शहरी परिवहन के लिए एडलरब्रेटस्का गेस्ट प्रोफेसर रही। आप 2009 से इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इंजरी कन्ट्रोल ऐन्ड सेफ्टी प्रमोशन की प्रमुख सम्पादक है। आप 2013–2020 तक अर्बन मास ट्रांजिट कम्पनी के बोर्ड में तथा 2016–2019 तक NIT हमीरपुर बोर्ड में रही। आप IATSS, फोरम तथा LEAD तथा ITRANS (IITD इन्क्यूबेशन कम्पनी) के बोर्ड में बनी हुई है।

आप ''एक्स्ट्राआर्डिनरी, कान्ट्रिब्यूशॅन टूवार्ड्स रोड़ सेफ्टी इन इण्डिया'' के लिए RITE और प्रिन्स माइकल इन्टरनेशनल रोड़ सेफ्टी अवार्ड 2002; मार्च 2006 में TIME-CNN-शेल फॉर अर्बनाइजेशन इश्यूज द्वारा प्रायोजित प्रिसिंपल वॉयस प्रोग्राम; 2010 का लखनऊ मैनेजमेन्ट एसोसिएशन वुमन अचीवर अवार्ड जैसे कई राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कारों की प्राप्तकर्त्ता रही हैं।

आपने 2012 में चाल्मार्न यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, स्वीडन से डॉक्टर ऑफ टेक्नोलॉजी की मानद उपाधि प्राप्त की है। आपके 100 से अधिक शोध प्रकाशन एवं परिवहन योजना तथा सुरक्षा के पाँच सम्पादित संस्करण हैं।

अत्यन्त मृदु एवं मित्तभाषी स्वभाव की प्रो. गीतम तिवारी अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं।

प्रो. सुश्री रत्नमाला चटर्जी, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग

प्रो. सुश्री रत्नमाला चटर्जी ने 8 मार्च, 1994 को संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 24 जनवरी, 2005 में सह प्रोफेसर, 12 अगस्त, 2008 में प्रोफेसर, अगस्त 2017 में एचएजी प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया। 2019 में इंस्टीट्यूट चेयर प्रोफेसर बनाया गया। 2019–2022 के दौरान आपने भा.प्रौ.सं. दिल्ली में भौतिकी विभाग के अध्यक्ष के रूप में सेवाएं प्रदान की।

प्रो. रत्नमाला चटर्जी ने 1986 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की और इसके बाद आप 1987 में मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, यूएसए में पोस्ट–डॉक्टरल एसोसिएट के रूप में शामिल हुई। आपको वर्ष 1992–93 में जापान रिसर्च एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन द्वारा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एजेंसी अवार्ड से सम्मानित किया गया, आपने वर्ष 1993 के दौरान नेशनल रिसर्च इंस्टीटयूट फॉर मेटेल, जापान में काम किया। आपको 1996 में ऑस्ट्रेलिया इंटरनेशनल एजुकेशन फाउंडेशन (AIEF) फेलोशिप से सम्मानित किया गया और आपने न्यू साउथ वेल्स, ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय में विजिटिंग फैकल्टी के रूप में एक सेमेस्टर बिताया। आपको वर्ष 2003 (सितंबर 2003 – दिसंबर 2003) में लेबरटोयर डी साइंस ऐट जेनिन डेस मटेरियाक्स ऐट डी मेटलर्जी, इकोले डेस माइन्स, नैन्सी, फ्रांस में CNRS प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किया गया और 2018 में आपको विजिटिंग प्रोफेसर, आईएमआर, तोहोकू, जापान में आमंत्रित किया गया। प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में आपके ~ 240 शोध प्रकाशन हैं।

प्रो. रत्नमाला चटर्जी जर्नल ऑफ मैग्नेटिज्म एंड मैग्नेटिक मैटेरियल्स, एल्सेवियर (इम्पैक्ट फैक्टर–3.097) की सलाहकार संपादक हैं। आपको रूसी विज्ञान संघ 2022 के विज्ञान और उच्च शिक्षा मंत्रालय MiSIS द्वारा 2022 में ''प्रायोरिटी 2030'' स्ट्रैटेजिक एकेडमिक लीडरशिप प्रोग्राम की विजेता घोषित किया गया। अक्टूबर, 2021 में ''विश्व शिक्षक दिवस और IITD अल्युमनी संकाय दिवस'' पर, IITD अल्युमनी संघ द्वारा ''सक्सेसफुल मेंटर अवार्ड (तन्मय बुनकर द्वारा स्टार्ट–अप बोटलैब डायनेमिक्स के लिए) से सम्मानित किया गया।

आपको वर्ष 2021–2023 में एक ग्लोबल इंस्टीट्यूट फॉर मैटेरियल्स रिसर्च तोहोकू, जापान (जीआईएमआरटी) का सदस्य (अंतरराष्ट्रीय) बनाया गया। आप रशियन साइंस फाउंडेशन, SUPRA योजना और FIST कार्यक्रम, डीएसटी, भारत सरकार, एयरोस्पेस संसाधन पैनल, डीआरडीओ, भारत सरकार जैसे कई राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय निकायों की सदस्य रही हैं। आप दिल्ली विश्वविद्यालय सहित कई विश्वविद्यालयों के शासी निकाय/अकादमिक परिषद की सदस्य भी रह चुकी है।

आपको वर्ष 2013 में एशिया–पैसिफिक एसोसिएशन फॉर मैटेरियल्स (APAM) का फेलो घोषित किया गया था और 2012 में आपको मैटेरियल्स रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया (MRSI) मेडल से भी सम्मानित किया गया। आपको वर्ष 2012 में अमेरिकन फिजिकल सोसाइटी (एपीएस) प्रोफेसरशिप अवार्ड से नवाजा गया।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में अपने कार्यकाल के दौरान आपने 30 पीएच.डी. छात्रों का पर्यवेक्षण किया है जो अब विभिन्न राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय संस्थान/विश्वविद्यालय में कार्यरत है।

अपने मिलनसार, सहयोगी समर्पित, निष्पक्ष, सौम्य स्वभाव की प्रो. सुश्री रत्नमाला चटर्जी अपने संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं।

प्रो. (सुश्री) रविन्दर कौर, प्रोफेसर, मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग

प्रो. (सुश्री) रविन्दर कौर ने 17 जून, 1996 को संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 24 जनवरी, 2005 में सह प्रोफेसर तथा 11 अगस्त, 2008 में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया।

आप मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में समाजशास्त्र एवं समाज मानवशास्त्र की प्रोफेसर रहीं है। आपने जुलाई 2015 से फरवरी 2018 तक विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। आपने 1986 में दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के समाजशास्त्र विभाग से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

आपके अनुसार इस संस्थान में आपका करियर बहुत ही उपयोगी रहा। इंजीनियरिंग के छात्रों को सामाजिक विज्ञान पढ़ाना रोमांचक रहा। यह चुनौती आपके लिए आशावान और छात्रों के लिए बहुत फलदायी थी। मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय के करियर की संतुष्टि के लिए भी यह बहुत अनुकूल है कि विभाग में पीएच.डी. कार्यक्रम है। कई छात्रों ने आपके अधीन स्नातक की उपाधि प्राप्त की और आपने उनमें से कई के साथ मिलकर अपनी बौद्धिक यात्रा जारी रखी। आईआईटी में, आपका शिक्षण और शोध एक फलदायी करियर बनाने में सक्षम रहा, एसटीईएम में महिलाओं पर एक प्रमुख परियोजना के साथ आपका अनुसंधान कार्य जारी है।

भा.प्रौ.सं. दिल्ली में अपने अकादमिक करियर से पहले, आपने दिल्ली विश्वविद्यालय और न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय में पढ़ाया। आप भा.प्रौ. सं. दिल्ली से टीचिंग एक्सीलेंस अवार्ड की प्राप्तकर्ता रहीं हैं और आपने 2018 में दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली

विश्वविद्यालय से DSE विशिष्ट पूर्व छात्र पुरस्कार भी प्राप्त किया। आप आंध्र प्रदेश में श्रीकृष्ण समिति के पांच सदस्यों में से एक रहीं है और आपने लिंग–चयनात्मक गर्भपात की निगरानी के लिए राष्ट्रीय पीसी–पीएनडीटी अधिनियम बोर्ड में भी काम किया है।

आपने मैरीलैंड विश्वविद्यालय, पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय और सामाजिक अध्ययन संस्थान (द हेग, नीदरलैंड्स) और न्यूयॉर्क के सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद में फैलोशिप प्राप्त की। वह सोशल फोर्सेस और वर्तमान समाजशास्त्र जैसी कई अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड में हैं। आपने विभिन्न लैंगिक मुद्दों पर यूएनएफपीए के सलाहकार के रूप में और एक्शन एड के साथ परियोजनाओं पर काम किया है। आपने संयुक्त राष्ट्र में महिलाओं की स्थिति पर 51वें आयोग और हाउस ऑफ लॉर्ड्स, यू.के में लिंग–चयनात्मक गर्भपात से संबंधित विषयों पर बात की।

आप आईआईटी दिल्ली में लैंगिक मुद्दों के प्रति आकर्षित हुई और औपचारिक रूप से 2014 से संस्थान में लैंगिक संवेदीकरण गतिविधियों में सक्रिय हो गई और बाद में आईआईटी दिल्ली की लैंगिक इकाई ''IGES - लैंगिक समानता और संवेदीकरण के लिए पहल'' की स्थापना के साथ और अधिक सक्रिय हो गई। आप लैंगिक सर्तकता समिति और IGES की संस्थापक सदस्य और पहली संयोजक रही। अभी हाल ही में, पिछले निदेशक प्रो. रामगोपाल राव के अनुरोध पर, आपने आईआईटी दिल्ली में DST पायलट प्रोजेक्ट ''GATI - जेंडर एडवांसमेंट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंस्टीट्यूशंस'' का नेतृत्व किया।

इस 18 महीने की परियोजना में विभिन्न लिंग समानता मानदंडों के साथ आईआईटी दिल्ली का मूल्यांकन शामिल था। आईआईटी दिल्ली के लैंगिक संतुलन और इसके लैंगिक माहौल में सुधार के लिए कार्य योजनाएं शुरू की गई हैं।

आपने मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की है और स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी, डिजाइन विभाग और ट्रिप केन्द्र की प्रोफेसरियल समितियों में भी सेवाएं प्रदान की है।

आपकी वर्तमान अनुसंधान रूचियों के क्षेत्र में जेंडर, परिवार, विवाह, रिश्तेदारी, मध्यम वर्ग, प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में महिलाओं का समाजशास्त्र शामिल रहा हैं। आप वर्तमान में लिंग, प्रौद्योगिकी और समाज तीन परियोजनाओं पर कार्य कर रही है।

विनम्रता एवं दृढ़ता से परिपूर्ण स्वभाव की प्रो. (सुश्री) रविन्दर कौर अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं।

श्री सुनील काक, सिस्टम प्रबंधक, कंप्यूटर सेवा केंद्र

श्री सुनील काक ने 30 जून, 1988 को कंप्यूटर सेवा केंद्र में सिस्टम ऑपरेटर (अकादमिक स्केल) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। आपको जनवरी, 1991 में कनिष्ठ प्रोग्रामर, अप्रैल 2000 में वरिष्ठ प्रोग्रामर, जून, 2014 में वरिष्ठ सिस्टम प्रोग्रामर और अप्रैल 2017 में सिस्टम मैनेजर के रूप में पदोन्नत किया गया।

आपने संयुक्त राज्य में केन्ट, बाथ और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों में टीसीटीपी अवार्ड के तहत 1991–1992 के दौरान कंप्यूटर नेटवर्किंग के क्षेत्र में छह महीनों के लिए प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने कई वर्षों तक नेटवर्किंग समूह के सदस्य भी रहे।

अपने कार्यकाल के दौरान, वह आईसीएल 39/80 मेनफ्रेम सिस्टम, एसयूएन वर्कस्टेशनों, आईबीएम आरएस/6000 एसपी सिस्टम (14 नोड्स) और इंटेल लिनेक्स क्लस्टर (18 नोड्स) के सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर भी थे। आप सीएससी और एलएचसी परिसर में कंप्यूटर प्रयोगशालाओं के प्रभारी भी रहे और आपने यूजी/पीजी पाठ्यक्रमों और साधारण/प्रमुख परीक्षाओं के लिए लगभग 450 पीसी और आरक्षित कंप्यूटर प्रयोगशालाओं का प्रबंधन और संचालन किया। कोविड काल के दौरान और कोविड के बाद अब तक आपने हजारों कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं को वीपीएन सुविधा और सैकड़ों उपयोगकर्ताओं को अपने सिस्टम पर वीपीएन इंस्टॉल करने में ऑनलाइन और ऑफलाइन सहायता भी प्रदान की।

आपने संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों को कई अवसरों पर आईटी/कंप्यूटर मूल्याकंन और स्वचालन में प्रशिक्षण प्रदान किया, उपयोगकर्ताओं को उनके कार्यक्रमों या सॉफ्टवेयर को चलाने के लिए परामर्श प्रदान किया, आईसीएल 39/80 पर छात्रों के लिए विभिन्न उन्मुखीकरण व्याख्यान आयोजित किए और आईबीएम आरएस/6000 एसपी प्रणाली और सत्रार्ध की शुरूआत में सीएससी में अन्य सुविधाओं का संचालन किया।

आपने वर्ष 1997–2003 (12 सेमेस्टर) से सीएसएल 100 और सीएसएल 120 छात्रों के लिए यूजी पाठ्यक्रम प्रयोगशालाओं का संचालन किया और पीजी पाठ्यक्रम में समन्वित और पढ़ाया गया, वर्ष 2013–14 के दौरान आपने पीजी पाठ्यक्रम एमएमपी706 (4 सेमेस्टर 2010–2013) और एमएपी707 के साथ समन्वय कर उन्हें पढ़ाया, बाहरी छात्रों के लिए बी.टेक और बी.सी.ए परियोजनाओं का निरीक्षण किया और आप वर्ष 2008 में गणित विभाग में दोहरी डिग्री प्रमुख परियोजना प्रस्तुति के लिए परीक्षक भी रहे। आप चार वर्ष तक ओपन हाउस के समन्वयक व एक अवसर पर सीनेट के सदस्य भी रहें।

संस्थान में राजभाषा हिन्दी की गतिविधियों को बढ़ाने में भी सुनील काक का हमेशा सहयोग मिला। सौम्य तथा विनम्र स्वभाव के श्री सुनील काक एक योग्य, कर्मठ एवं मेहनती सिस्टम प्रबन्धक रहे हैं।

श्री जगदीश सिंह (50303), माली, निर्माण संगठन

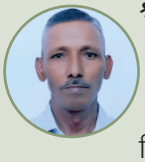

श्री जगदीश सिंह ने 6 फरवरी, 1991 को संस्थान में वेतनमान 750– 940/–रु. के वेतनमान में ग्रुप 'डी' के रूप में नियुक्त किया गया। 6 फरवरी, 1996 में आपको आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत 800–1150/2550–3200 रु. के वेतनमान में चयनित किया गया तथा 1 जनवरी, 2016 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत उन्नयन दिया गया। सौम्य स्वभाव के श्री जगदीश सिंह एक मेहनती एवं कर्मठ माली रहे हैं।

श्री चेतराम (60098), तंदूरिया, नीलगिरी छात्रावास

श्री चेतराम ने 6 अप्रैल, 1985 को संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया था। श्री चेतराम ने लगभग 38 वर्षों तक संस्थान में तन्दूरिया के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। श्री चेतराम एक मिलनसार, मेहनती एवं कर्मठ तंदूरिया रहे हैं।

श्री राम बहादुर (60176), मसालची, ज्वालामुखी छात्रावास

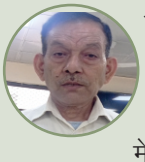

श्री राम बहादुर ने 1 अक्टूबर, 2007 को संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया था। आपने 15 वर्षों से भी अधिक तक संस्थान में मसालची के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। श्री राम बहादुर एक मेहनती एवं कर्मठ मसालची रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय/स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

आजादी का अमृत महोत्सव

बापू ने जगाई हिंदी की अलख

इतिहास के स्वर्णाक्षर

डा. राजेंद्र प्रसाद उन स्वतंत्रता सेनानियों में अग्रगण्य थे, जो महात्मा गांधी की नीतियों, नेतृत्व और अहिंसात्मक आंदोलन में विश्वास रखते थे। प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद की जन्मजयंती (3 दिसंबर) पर पढ़िए उनके द्वारा बापू के व्यापक प्रभाव का अद्भुत वर्णन.....

एक बार गांधी जी के साथ मैं किसी गांव से आ रहा था। रास्ते में मैंने उनसे पूछा, 'आप तो सारे देश में घूम आए हैं, आपने किस सूबे के लोगों को सार्वजनिक काम के लिए सबसे अच्छा पाया?' इस पर उन्होंने कहा, 'दक्षिण के लोग भावुक हैं–चतुर हैं। बंगाल के लोग बहुत भावुक हैं, उनमें त्याग की बड़ी शक्ति हैं, उन्होंने त्याग किया भी बहुत है। पर जनता की सेवा करने वाले के लिए तो तीर्थस्थान 'पूना' है। वहां जितनी सार्वजनिक संस्थाएं कार्यकर्ताओं के त्याग पर निर्भर रहकर चलती हैं, उतनी शायद किसी दूसरे स्थान में नहीं। वहां ऐसे बहुतेरे लोग हैं, जिन्होंने अपने जीवन को देशसेवा के लिए समर्पित कर दिया है। वे अपने संकल्प को बहुत ही दृढ़ता से निबाह रहे हैं। इसलिए मैं उसको तीर्थ – स्थान मानता हूं।'

मुझे भी इसका कुछ पता लगा था जब 1910 में श्री गोखले से मेरी मुलाकात हुई थी और उन्होंने मुझसे भारत–सेवक संघ में शरीक होने को कहा था। परंतु गांधी जी के कहने पर मेरी इच्छा हो गई कि एक बार वहां जाकर उन संस्थाओं को देखना चाहिए।

हम लोग आपस में बातें किया करते कि हमारा सूबा, और सूबों के मुकाबले में बहुत पिछड़ा हुआ है। उस वक्त तक शायद ही ऐसे लोग बिहार में हों, जो अपना सारा समय देकर किसी सार्वजनिक संस्था का अथवा देश का काम कर रहे हों। हम लोगों का विचार हुआ कि कोई ऐसी संस्था बिहार में कायम की जाए, जिसका लक्ष्य देशसेवा रहे। बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद जी हम लोगों के नेता और प्रेरक थे। हम लोगों ने सुना था कि पूना में फरगुसन कालेज के सभी शिक्षक और आचार्य 75 रुपये मासिक लेकर ही काम करते है। श्री गोखले ने 20 वर्ष तक व्रत लेकर 75 रुपये पर ही काम किया था। उसी तरह, उन दिनों, डा. प्रांजपे–जो इंग्लैंड से भारी से भारी परीक्षाएं पास करके आए थे–75 रूपये मासिक पर ही वहां काम कर रहे थे। हम लोगों का विचार हुआ कि अब ऐसा ही एक कालेज बिहार में भी खोला जाए।

चंपारन आने के पहले ही गांधी जी ने साबरमती में सत्याग्रह आश्रम कायम कर लिया था। वह चंपारन यह सोचकर आए थे कि पांच–सात दिनों के अंदर वहां का काम करके वापस आश्रम चले जाएंगे, पर जब उन्होंने देखा कि वहां पांच–सात दिनों के बदले महीनों रहना पड़ेगा तो उन्होंने आश्रमवासियों को खबर दे दी कि वहां का काम वही लोग चलावें और कुछ दिनों तक उनके लौटने का भरोसा न रखें। इस प्रकार, आश्रम का काम वहां चलने लगा।

चंपारन से ही वह जो आदेश दे सकते थे, देते रहे। चंपारन में रहते–रहते उन्होंने दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार के काम का सूत्रपात किया। वह इस तरह से हुआ कि एक बार उनसे मिलने के लिए स्वामी सत्यदेवजी आए। स्वामी जी की ख्याति बहुत थी। बिहार में, खासकर चंपारन में, वह कभी–कभी जाया करते और अपने व्याख्यानों से जागृति पैदा करते। उनकी हिंदी पुस्तकें भी प्रचलित थीं। विदेश के उनके अनुभवों से लोग परिचित और प्रभावित थे। वह गांधी जी से मिलने के लिए बेतिया आए। गांधी जी ने कुछ दिनों के लिए उनको साबरमती आश्रम में जाकर रहने की सलाह दी। उन्होंने वैसा ही किया। फिर कुछ दिनों के बाद गांधी जी ने उनको दक्षिण भारत में जाकर हिंदी प्रचार करने की सलाह दी। स्वामी जी मद्रास में जाकर कुछ दिनों तक काम करते रहे। उनके साथ ही महात्मा जी ने अपने पुत्र देवदास गांधी को भी हिंदी प्रचार के लिए भेजा। मेरा संबंध हिंदी साहित्य सम्मेलन के साथ पहले अधिवेशन से ही था, जो काशी में महामना मालवीय जी की अध्यक्षता में 1910 में हुआ था। मैं उस प्रथम सम्मेलन में शरीक हुआ था जहां तक स्मरण है, वहीं पर पहले पहल श्री पुरुषोत्तम दास टंडन को देखा था। शायद कुछ परिचय भी उनसे हो गया था, पर विशेष परिचय तो सम्मेलन के कलकत्ता वाले दूसरे अधिवेशन में ही हुआ, जिसकी स्वागतकारिणी समिति का मैं मंत्री था।

हिंदी प्रचार का काम मुझे याद नहीं कि उसने कहाँ आरंभ किया, पर दक्षिण भारत में गांधी जी के हिंदी प्रचार कार्य ने मेरी आंखों के सामने हिंदी के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र खोल दिया, मैं उसके एक दिन सारे भारत की राजकीय भाषा हो जाने का स्वप्न देखने लगा। इस प्रचार कार्य के साथ मेरा कोई सीधा संबंध तो नहीं था पर उसमें दिलचस्पी मैं लेने लगा। बिहार के कुछ प्रचारक वहाँ गए। महात्मा जी के साथ मेरा संपर्क होने से वहां मेरा संपर्क और भी घनिष्ठ होता गया। महात्मा जी के हिंदी प्रचार के काम से प्रभावित होकर हिंदी साहित्य सम्मेलन ने उनको इंदौर के अधिवेशन का, जो 1918 में हुआ, सभापति चुन लिया। इंदौर महात्मा जी चंपारन से ही गए। हममें से कई आदमी उनके साथ ही गए। वहाँ का सम्मेलन बड़े समारोह के साथ हुआ। दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार के लिए वहीं पर कुछ रुपये जमा किए गए। सम्मेलन ने उनकी प्रेरणा से इस काम को अपना एक मुख्य काम बना लिया।

(किताब 'बापू के कदमों में' से साभार)

साभार– दैनिक जागरण

दिनांक–11 सितम्बर, 2022

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

ई–मेलः sagarprinters@gmail.com